महाराणा प्रताप

Scanned by CamScanner

महाराणा प्रताप

भारत के इतिहास में महाराणा प्रताप का नाम साहस, शौर्य, त्याग एवं बलिदान के लिए सदैव अत्याधिक प्रेरणा देने वाला रहा है। मेवाड़ के सिसोदिया वंश में बाप्पा रावल, राणा हमीर, राणा सांगा जैसे महाप्रतापी शूरवीर राजा हुए। वे सभी राणा के नाम से जाने जाते थे। परन्तु 'महाराणा' का गौरवयुक्त संबोधन केवल प्रतापसिंह को ही मिला था।

मुगल सम्राट अकबर के द्वारा दिए गए झूठे आश्वासन, भोग-विलास, उच्च स्थान, पदाधिकार आदि प्रलोभनों के वशीभूत होकर कई राजपूत राजाओं ने उसका प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था और उसके आश्रित हो गये थे। सुखी जीवन की लालसा पूर्ति हेतु अनेक वीर राजपूत अपना गौरव खो चुके थे। ऐसा लगता था मानो राजस्थान ही नहीं अपितु सारा भारत अपना आत्मगौरव खो चुका है।

ऐसे विकट समय में मेवाड़ के महाराणा प्रताप का मातृभूमि की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु पदार्पण हुआ।

प्रारम्भिक जीवन

9 मई, 1540 को प्रताप का जन्म हुआ। मेवाड़ के राणा द्वितीय उदयसिंह की 23 सन्तानें थीं। उनमें प्रताप सबसे बड़े थे। माता रानी जयवन्ता बाई उच्च संस्कारों की धार्मिक महिला थीं। वह स्वाभिमानी व सद्‌गुणी थीं। प्रताप के बाल्यकाल के क्रिया-कलापों से यह स्पष्ट दिखने लगा था कि आगे चलकर वे महापराक्रमी होंगे। पढ़ाई की अपेक्षा खेल-कूद

Scanned by CamScanner

तथा अस्त्र-शस्त्र संचालन में ही प्रताप की रुचि विशेष रूप से थी। उनका अधिकतर समय अपने भाई शक्तिसिंह के साथ जंगलों में वन्य पशुओं का शिकार करने में बीतता था।

राज्याभिषेक

उन दिनों भारत में मुगल बादशाह अकबर अत्यंत शक्तिशाली था। वह कूटनीतिज्ञ था और महाधूर्त था। बड़ी चालाकी से शूर राजपूतों से मित्रता बढ़ा कर वह उन्हें अपने अधीन कर लेता था। वह हिन्दुओं के ही बल से, हिन्दू नरेशों को गुलाम बनाता। हिन्दू वीरों को पालतू बाज बना कर उन्हें पूर्णत: नियन्त्रण में कर लेता। हिन्दूओं की मूर्खता तथा उनकी आपसी फूट का अकबर ने भरपूर लाभ उठाया। हिन्दुओं के स्वाभिमान को कुचलने हेतु, उसने एक से एक बढ़कर उपाय किये। इस प्रकार लगभग सभी राजपूत राजाओं को अपने अधीन कर लेने में वह सफल रहा। कुछ राजपूत राजाओं ने तो मान-सम्मान के लालच में अपनी उज्ज्वल परम्परा और क्षात्रधर्म को तिलांजलि देकर अपनी बेटियों तक को अकबर की शरण में पहुँचा दिया।

दूसरी ओर, मेवाड़, बूंदी तथा सिरोही वंश के राजा अन्त तक अकबर से संघर्ष करते रहे। मेवाड़ के राणा उदयसिंह का स्वतन्त्र रहना अकबर को अपने सामर्थ्य का अपमान लगता था। उसने चितौड़ पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन करने के लिए बहुत बड़ी सेना भेजी। इधर उदयसिंह प्रारम्भ से ही युद्ध से मुँह मोड़ते हुए विलासी जीवन बिता रहा था। मेवाड़ की मान-मर्यादाओं एवं गौरव का संरक्षण करने का साहस उसमें नहीं था। परिणामत: अकबर की सेना का आक्रमण होते ही वह राजधानी से भाग निकला और अरावली की पहाड़ियों में जा छिपा। वहीं पर उसने उदयपुर

Scanned by CamScanner

नामक नगर बसाया और वहीं अपनी राजधानी बनाई। चितौड़ के युद्ध के चार साल बाद 3 मार्च, 1572 को उदयसिंह का निधन हो गया।

उदयसिंह का अपनी छोटी रानी से बहुत अधिक प्रेम था। इसलिए उसने अपनी मृत्यु से पूर्व, उसके पुत्र जगमल को, जो यद्यपि प्रतापसिंह से छोटा था, अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। अपने पिता की इच्छानुसार तथा प्रभु श्रीरामचंद्र के समान सिंहासन का त्याग कर मेवाड़ से कहीं दूर चले जाने के विचार से प्रताप ने तैयारी की। परन्तु वहाँ के सरदारों को प्रताप की यह बात उचित नहीं लगी। क्योंकि राजपूत राजघरानों में पिता के बाद ज्येष्ठ पुत्र को ही सिंहासन पर बिठाने की परम्परा रही है। और जगमल प्रताप के समान शूर, स्वाभिमानी और साहसी भी नहीं था।

उदयसिंह के विलासी जीवन के कारण ही मेवाड़ का गौरव एवं स्वाभिमान धूल धूसरित हो गया था। यह सभी सरदार भली–भाँति जानते थे। ऐसी स्थिति में जगमल से मेवाड़ की सुरक्षा की कोई आशा नहीं थी। अत: सब सरदारों ने मिलकर निर्णय किया कि प्रतापसिंह को ही सिंहासन पर बिठाना चाहिए और जगमल को सिंहासन का त्याग करने के लिए बाध्य करना ही चाहिये।

पिता की इच्छा पूर्ण करने का ही विचार एवं निश्चय था प्रताप का। परन्तु उनके सरदारों ने उनसे प्रबल आग्रह किया कि राज्य की स्वतंत्रता व गौरव की रक्षा के लिए उन्हें ही सिंहासन पर बैठना चाहिए। अन्त में प्रताप को अपने सरदारों का आग्रह मानना पड़ा और प्रताप का राज्याभिषेक हुआ।

भीष्म प्रतिज्ञा

राणाप्रताप जब राजसिंहासन पर बैठे तब देश की परिस्थिति अत्यन्त

Scanned by CamScanner

प्रतिकूल थी। वे चारों ओर शत्रुओं से घिरे थे। इससे भी अधिक दुर्भाग्य की बात यह थी कि उनके सगे भाई शक्तिसिंह व जगमल दोनों मुगलों से जा मिले थे। शत्रुओं का सामना करने के लिए पर्याप्त मात्रा में सुसज्जित सैन्य बल तथा आवश्यक युद्ध सामग्री का होना अति आवश्यक था। उसके लिए अपार धन की आवश्यकता थी। उनके पास धन का बहुत अभाव था, जबकि मुगलों के पास धन और अन्य साधन असीम थे। ऐसी विकट परिस्थिति में भी राणा प्रताप निराश या भयभीत नहीं हुए।

एक दिन राणा प्रताप ने अपने दरबार में विश्वासपात्र सरदारों की सभा बुलाई। सभा में उन्होंने अपनी धीर-गम्भीर एवं ओजस्वी वाणी में कहा - 'मेरे शूरवीर राजपूत भाइयो! यह हमारी मातृभूमि, पुण्यभूमि मेवाड़ आज भी यवनों के अधीन है। इसी मेवाड़ की रक्षा के लिए बाप्पा रावल, राणा हमीर, राणा सांगा जैसे शूरवीर एवं प्रतापी पूर्वजों ने हँसते-हँसते मातृभूमि की रक्षा के लिऐ अपने प्राणों का बलिदान दिया। वीर राजपूत माताओं ने अपनी मानमर्यादा की रक्षा हेतु धधकती ज्वाला में अपने प्राणों की आहुति दे दी। क्या आज हम अपने बाहुबल व शौर्य से मेवाड़ को पुनः स्वतंत्र कराने में सक्षम नहीं हैं? क्या यह सत्य नहीं है कि अपने महापराक्रमी पूर्वजों का नाम सुनते ही हमारे शत्रुओं की नींद हराम हो जाती थी। उन्हीं वीरों के हम वंशज हैं। उन्हीं का खून हमारी नसों में दौड़ता है। फिर आज हमें क्या हो गया है? आज आपके सामने मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ - 'जब तक चितौड़ को स्वतन्त्र नहीं करा लेते, मैं सोने-चाँदी की थाली में भोजन नहीं करूँगा, मुलायम गद्दों पर नहीं सोऊँगा; राजभवन में वास नहीं करूँगा। इनके स्थान पर मैं पत्तल में भोजन करूँगा, जमीन पर ही सोऊँगा, झोपड़ी में वास करूँगा और चित्तोड़ को जब तक स्वाधीन नहीं कर लेता, तब तक दाढ़ी नहीं कटवाऊँगा। शूरवीर सरदारो! मेरी यह

Scanned by CamScanner

प्रतिज्ञा पूर्ण करने में आप तन-मन-धन सभी प्रकार से मुझे सहयोग दें, सहायता करें। यही आप लोगों से निवेदन है।'

राणा प्रताप के इन प्रेरक उद्‌गारों तथा उनकी कठोर प्रतिज्ञा के फलस्वरुप उपस्थित सभी सरदारों में उत्साह की लहर दौड़ गयी। उन्होंने तत्काल एक स्वर से घोषणा की - 'प्रभो! हमारे शरीर के रक्त की अन्तिम बूँद तक हम चितौड़ की मुक्ति के लिए आपके साथ कन्धे से कन्धा लगाकर लड़ेंगे।

युद्ध की सिद्धता

अपने समय में अकबर अपार ऐश्वर्य प्रेमी, सत्ता सम्पन्न व शक्तिशाली बादशाह था। उसकी सैन्य-शक्ति असीम थी। भारत के बहुत बड़े भाग पर उसका अधिकार हो चुका था। ऐसे प्रबल एवं बलवान शत्रु से सामना कर उसे परास्त करना कोई आसान बात नहीं थी। व्यवहार कुशल महाराणा प्रताप ने सारी परिस्थिति का सम्यक् अध्ययन एवं परीक्षण किया एवं गढ़ कोटों को छोड़ कर गिरिकंदराओं में, संकरी घाटियों में रह कर शत्रु से लड़ने का मार्ग अपनाया।

महाराणा उस समय अपने साथियों के साथ कमलमेरु दुर्ग में रहते थे। वह दुर्ग बहुत ऊँचे पहाड़ों के बीच में था। इन दुर्गम रास्तों से परिचित शूरवीर राजपूत ही वहाँ पर निर्भयतापूर्वक आ-जा सकते थे। महाराणा प्रताप वहाँ पर धीरे-धीरे अपनी सेना एकत्रित करने लगे। परन्तु उनके पास शस्त्रास्त्रों की भारी कमी थी। उनका संग्रह करने के लिए आवश्यक धन भी उनके पास नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने सरदारों को मेवाड़ के मार्ग से होकर आने-जाने वाले मुगल व्यापारियों को लूटने की आज्ञा दी। इस प्रकार की गयी लूट में प्रताप को काफी धन व शस्त्र प्राप्त हुए।

Scanned by CamScanner

स्वाभिमान का प्रतीक

एक बार शीतल नामक एक भाट अपनी यात्रा के दौरान महाराणा के दरबार में आ पहुँचा। महाराणा का तेजस्वी, तपस्वी रूप देखकर उसका कवि मन भावविभोर हो उठा और उसके मुख से यशोगान स्वरूप एक वीररसयुक्त कविता निकल पड़ी जिसमें महाराणा के प्रखर स्वाभिमान, अतुलनीय शौर्य, साहस आदि गुणों का यथोचित वर्णन था। पुरुषार्थ, पराक्रम का सन्देश देनेवाली यह कविता सुनकर महाराणा अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरन्त अपनी स्वयं की पगड़ी उतारकर कवि को पहना दी। यह अमूल्य उपहार पाकर शीतल भाट ने स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया। वह आनन्द से फूला नहीं समाया।

शीतल भाट गाँव-गाँव घूमते हुए आगरा जा पहुँचा और वहाँ वह अकबर के दरबार में प्रविष्ट हुआ। पूरा दरबार लगा हुआ था। सरदार, मंत्री आदि सभी उपस्थित थे। अकबर सिंहासन पर विराजमान था। दरबार के नियमानुसार उसे बादशाह के सामने गर्दन झुकाकर प्रणाम करने को कहा गया। शीतल ने उसी प्रकार प्रणाम तो किया, परन्तु उसके पूर्व उसने अपने सिर से पगड़ी उतारकर अपने सीने से लगा ली थी। यह देखकर अकबर को बड़ा आश्चर्य हुआ। उत्सुकतावश उसने शीतल से इसका कारण पूछा। शीतल भाट ने बहुत विनम्रता से, किन्तु स्वाभिमानपूर्वक उत्तर दिया- 'सरकार, यह पगड़ी मेरी नहीं, वीरों के शिरोमणि, मेवाड़ सूर्य, महाराणा प्रताप की है जो उन्होंने मुझे उपहार में दी है। यह मेरी प्राण से भी अधिक प्रिय, अमूल्य धरोहर है। मेरा शीश आपके सामने झुक सकता है, किन्तु यह पगड़ी कदापि नहीं।' शीतल कवि का यह स्वाभिमानपूर्ण दो-टूक उत्तर सुनकर स्वयं अकबर ही नहीं, अपितु दरबार में उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये।

Scanned by CamScanner

मानसिंह का मानभंग

राजा मानसिंह जयपुर के महाराजा बिहारीमल का पुत्र था। अकबर को अपनी कन्या समर्पित करने वाला प्रथम राजपूत नरेश बिहारीमल ही था। उनका पुत्र मानसिंह महापराक्रमी था। अकबर ने अपना आधा साम्राज्य मानसिंह के बल पर ही प्राप्त किया था। उसे अकबर ने अपना सेनापति नियुक्त किया था। महाराणा प्रताप के राजगद्दी पर बैठने के कुछ ही दिन बाद अकबर ने मानसिंह को महाराणा से मिलने के लिए भेजा। अकबर ने मानसिंह को यह आदेश देकर भेजा था कि वह महाराणा को मुगलों के अधीन होने के लिए मनवाने हेतु सभी सम्भव प्रयास करे।

दूसरे ही दिन राजा मानसिंह ने अपने एक दूत द्वारा महाराणा प्रताप को यह सन्देश भेजा कि वह उनसे मिलने आ रहा है। महाराणा को मानसिंह से बहुत घृणा थी। वे उससे मिलना नहीं चाहते थे। परन्तु अतिथि-सत्कार धर्म निभाते हुए महाराणा ने अपने पुत्र अमरसिंह को मानसिंह का सादर स्वागत करने का आदेश दिया।

भोजन का समय हुआ। अमरसिंह ने मानसिंह को भोजन के लिए निमंत्रित किया। मानसिंह आया, परन्तु उसे महाराणा वहाँ दिखाई नहीं दिये। अत: उसने अमरसिंह से पूछा – 'कुमार, महाराणाजी कहाँ हैं?' अमरसिंह ने उत्तर दिया– 'महाराणाजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इसलिए वे यहाँ नहीं आ सके।' मानसिंह ने कहा – 'घर का यजमान ही जब भोजन पर उपस्थित नहीं है, तब अतिथि भोजन कैसे कर सकेगा?' इस पर अमरसिंह ने विनम्रतापूर्वक कहा– 'महाराज, मैं उनका पुत्र तो यहाँ हूँ और आपके साथ भोजन करनेवाला हूँ।' राजा मानसिंह के मुख पर मायूसी छा गई। वह कहने लगा, 'ठीक है कुमार, महाराणा प्रताप के न आने का

Scanned by CamScanner

रहस्य मैं समझ गया। वे मेरे साथ भोजन करना नहीं चाहते।'

'मानसिंहजी, आप इस प्रकार न सोचें। जब उनका स्वास्थ्य ही ठीक नहीं है, तो वे भोजन कैसे कर सकेंगे'?, अमरसिंह ने मानसिंह को मनाने का प्रयास किया।

मानसिंह ने दुखी होकर कहा- 'उनका स्वास्थ्य ठीक न होने का अर्थ मैं समझ रहा हूँ, अमरसिंह। उनके यहाँ आकर मेरे साथ भोजन करने पर ही मैं भोजन करूँगा। अन्यथा मैं बिना भोजन किये ही यहाँ से लौट जाऊँगा।'

अन्त में महाराणा प्रताप वहाँ आये और उन्होंने मानसिंह से कहा-'मानसिंहजी, मै आपके साथ भोजन नहीं कर सकता। यह बात मैं अत्यन्त व्यथित मन से आपसे कह रहा हूँ। कारण, आपने राजपूतों के गौरव-सम्मान को धूल में मिला दिया है। धन, ऐश्वर्य, राजवैभव, मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा की लालसा के वशीभूत होकर आपने अपनी कन्याओं का विवाह मुगलों से, म्लेच्छ-यवनों से कर दिया है। अत: मैं आपके साथ भोजन करके बाप्पा रावल, राणा सांगा जैसी पवित्र आत्माओं और महायोद्धाओं के वंश को कलंकित नहीं करूँगा।' इस प्रकार महाराणा की प्रताड़ना से मानसिंह क्रोधित हो गया। फिर 'अन्नपूर्णा' का अपमान करना उचित नहीं, ऐसा विचार कर उसने कुछ अन्न-कण अपने साथ रख लिए।

परन्तु जाने से पूर्व मानसिंह ने बड़े अहंकार के साथ कहा- 'महाराणा प्रतापसिंह! आज आपने मेरा अपमान किया है। इसका बदला लेकर ही मैं चैन लूँगा।'

मानसिंह की यह भड़ास सुनकर वीरावेश से महाराणा ने कहा-

Scanned by CamScanner

'आप अपनी निजी सेना लेकर आयें तो मैं आपका सब प्रकार से समुचित स्वागत ही करूँगा। पर यदि आप अकबर की मुगल सेना के साथ आयेंगे, तो आपसे मुकाबला करने के लिए मेरी खड्ग सदा तैयार रहेगी।'

मानसिंह चला गया। दिल्ली पहुँचकर अपने अपमानित होने का पूर्ण विवरण उसने अकबर को निवेदित किया।

हल्दीघाटी का समर

राणा प्रताप को अपने वश में लाने के अकबर के सारे प्रयास विफल रहे। संधिवार्ता विफल होने के कारण युद्ध अनिवार्य है, इस बात को अकबर तथा राणा प्रताप दोनों ही अच्छी प्रकार समझ रहे थे। अकबर ने राणा प्रताप से युद्ध करने की ठानी। इस उद्देश्य से अकबर ने दो लाख सैनिकों की एक प्रचण्ड सेना तैयार करवायी। और इस विशाल सेना का सेनापति बनाया मानसिंह को। उसकी सहायता के लिए युवराज सलीम तथा शक्तिसिंह (राणा प्रताप का भाई जो मुगलों से जा मिला था) की नियुक्ति की। और यह सैन्य-दल राणा प्रताप को परास्त करने मेवाड़ की ओर चल पड़ा।

उधर महाराणा प्रताप भी इस परिस्थिति से बेखबर नहीं थे। वे सजग थे। वे अपनी राजधानी दुर्गम पहाड़ों से घिरे कुंभलगढ़ ले गये जिसका अभी तक युद्ध कार्य में उपयोग नहीं हुआ था। और राणा प्रताप ने गिरि वनवासी भील लोगों को अपनी सेना में भरती करके उनकी सेना खड़ी की। साथ ही सारे राजपूत सरदारों से मेवाड़ की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक ध्वज के नीचे एकत्रित होने का आहवान् किया। राणा प्रताप की सेना में केवल 6000 सैनिक थे जबकि अकबर की विशाल सेना में दो लाख सैनिक थे।

Scanned by CamScanner

राणा प्रताप ने अपनी अल्प किन्तु सुसज्ज व जुझारू सेना को हल्दीघाटी में लाकर खड़ा कर दिया। हल्दीघाटी बड़े-बड़े पहाड़ों के मध्य में है। वहाँ पहुँचने के लिए संकरे और संकीर्ण मार्ग से ही जाना पड़ता है। मार्ग के दोनों ओर की पहाड़ियों मे राणा प्रताप के भील सैनिक छिपकर बैठ गये। राणा प्रताप की योजना थी – अकबर की सेना जैसे ही इस रास्ते से गुजरेगी, दोनों ओर की पहाड़ियों से उस पर बड़े-बड़े पत्थरों के साथ बाणों की वर्षा कर मुगल सेना को आगे बढ़ने से रोकना।

अकबर की सेना पहाड़ियों को पार कर संकरे मार्ग से हल्दीघाटी में प्रवेश करने लगी। उसी समय एकाएक दोनों ओर से शाही सेना पर बाणों की भारी वर्षा होने लगी। बड़े-बड़े पत्थर ऊपर से गिरने लगे। इसके फलस्वरूप हजारों मुगल सैनिक हताहत हुए। मानसिंह को तुरन्त परिस्थिति का ज्ञान हो गया। वह अपने सैनिकों में उत्साह भरने का प्रयास करने लगा और उसने संकरे मार्ग को जल्दी से जल्दी पार करने का आदेश दिया। शेष मुगल सैनिक बाणों व पत्थरों की मार सहते हुए बड़े कष्ट से किसी प्रकार उस मार्ग को पार कर हल्दीघाटी के मैदान में पहुँच गये। वहाँ पर महाराणा प्रताप के सैनिकों तथा मुगल सैनिकों में घमासान युद्ध हुआ। शूर राजपूत सैनिक मुगल सैनिकों पर टूट पड़े।

महाराणा अपने प्रिय प्रतापी अश्व 'चेतक' पर सवार होकर शत्रुओं की सेना में घुस गये और उन्हें मौत के घाट उतारने लगे।

उन्हें अकस्मात राष्ट्रद्रोही मानसिंह का स्मरण हो आया। उन्होंने तुरन्त अपना घोड़ा मानसिंह की ओर दौड़ाया। मानसिंह हाथी पर सवार था। उस हाथी के निकट पहुँचते ही महाराणा ने निशाना साधकर अपना भाला मानसिंह की ओर फैंका। किन्तु दुर्भाग्यश लक्ष्य-वेध चूक गया, वार

Scanned by CamScanner

खाली गया। किन्तु भाले से बुरी तरह आहत अपने हाथी पर सवार होकर मानसिंह युद्धभूमि से भाग निकला।

एकाएक महाराणा को युवराज सलीम हाथी पर बैठा दिखाई दिया। वे तुरन्त उसकी ओर लपके। उन्होंने 'चेतक' को संकेत दिया और 'चेतक' ने उछल कर अपने दोनों पैर हाथी के सिर पर टिकाए। प्रताप ने बड़े आवेश से अपना भाला सलीम की ओर फैंका। परन्तु भाला सलीम को न लग कर उसके महावत को लगा। महावत उसी क्षण नीचे गिर पड़ा। इस प्रकार सलीम भी बच गया। उसी क्षण सलीम के सैनिकों ने तुरन्त प्रताप को चारों ओर से घेर लिया। अब तक प्रताप काफी घायल हो चुके थे।

प्रताप के छत्र को पहचान कर शत्रु सरदार व सैनिक उन्हें घेरने लगे हैं, यह बात झाला के राणा मानसिंह के ध्यान में आयी। प्रताप काफी थक गये हैं, यह भी उन्होंने ताड़ लिया। उन्होंने राणा को बचाने का निश्चय किया। तुरन्त आगे बढ़कर उन्होंने प्रताप का छत्र और उनका किरीट (मुकुट) स्वयं धारण किया। तत्पश्चात् उन्होंने प्रताप से कहा- 'महाराणाजी, आप थक गये हैं। काफी घायल हो चुके हैं। दुर्भाग्यवश यदि आप वीरगति को प्राप्त हुए तो मेवाड़ को मुक्त कराना अन्य किसी के बस की बात नहीं है। मेवाड़ के आप ही एक तारणहार हैं। आप हैं तो मेवाड़ है। आपका सुरक्षित रहना अत्यंत आवश्यक है। अतः मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है, आग्रह है कि आप तुरन्त यहाँ से चले जाइये।'

मानसिंह झाला की यह बात प्रताप ने मान ली और अविलम्ब अपने घोड़े 'चेतक' को अन्यत्र दौड़ाया। शत्रुओं ने महाराणा के मुकुट को पहचाना और ऐसा समझ कर कि वही प्रताप हैं, झाला पर आक्रमण कर दिया। मानसिंह झाला सजग थे ही। उन्होंने दृढ़ता और बहादुरी से शत्रुओं

Scanned by CamScanner

का मुकाबला किया व कई मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। वे अपने आखिरी दम तक शत्रु से लड़ते रहे। अंत में क्षत्रिय धर्म का समुचित पालन करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुए।

शक्तिसिंह का पश्चाताप

महाराणा प्रताप को अकेले, किसी दूसरे ही मार्ग से जाते हुए, दो मुसलमान सरदारों ने देख लिया। उन्होंने अपने घोड़े महाराणा की ओर दौड़ाये। परम स्वामीभक्त 'चेतक' अपने स्वामी को लेकर तेजी से दौड़ रहा था, वे दो मुगल सरदार भी प्रताप का तेजी से पीछा करने लगे। इस दृश्य को प्रताप के भाई शक्तिसिंह ने देखा और वह सब कुछ समझ गया। अपने भाई प्रताप को छोड़ कर मुगलों का साथ देने के अपने दुष्कर्म पर उसे बड़ी ग्लानि होने लगी। उसका हृदय-परिवर्तन हो गया। उसने अपने घोड़े पर सवार होकर उन मुगल सरदारों का पीछा किया और उनका खात्मा कर दिया। अपने मन की इस परिवर्तित भावना से प्रताप को अवगत कराने के उद्देश्य से उसने अपना घोड़ा प्रताप की ओर दौड़ाया।

जब महाराणा ने पीछे मुड़कर देखा तो उन्हें लगा कि शक्तिसिंह ही अपनी ओर आ रहा है और वह बदला लेने के लिए ही आ रहा है। उन्होंने अपने घोड़े को रोककर शक्तिसिंह से कहा- 'आओ शक्तिसिंह, तुम भी मुझ से लड़ कर अपनी इच्छा पूरी कर लो।'

यह बात सुन कर मानो शक्तिसिंह प्रेम, दुख और लज्जा से अभिभूत हो गया। वह तुरन्त अपने बड़े भाई प्रताप के चरणों पर गिर पड़ा। उसने अपनी सारी व्यथा अश्रुपूर्ण नयनों से तथा रुद्ध कण्ठ से प्रताप को सुनायी। प्रताप का हृदय भी द्रवित हो गया। उनकी भी आँखों से आँसू बहने लगे।

Scanned by CamScanner

आगे बढ़ कर उन्होंने शक्तिसिंह को गले लगा लिया। 'बन्धु-प्रेम' की विजय हुई।

इतिहास में राणा प्रताप के समान ही उनके प्रतापी, स्वाभिमानी व संस्कारी अश्व 'चेतक' की स्मृति भी अमर हो गई। इस घमासान युद्ध में वह भी बहुत घायल हो चुका था। फिर भी उसने अपने स्वामी की जान बचाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा कर एक बड़े नाले को एक ही छलाँग में पार किया था। नाले के पार पहुँचते ही वह गिर पड़ा। इस प्रकार उसने अपने प्राण देकर अपने स्वामी के प्राणों की रक्षा की। जिस स्थान पर चेतक ने प्राण छोड़े थे, उस स्थान पर प्रताप ने एक सुन्दर उद्यान का निर्माण करवाया।

स्वतः अकबर ही

हल्दीघाटी का युद्ध अपेक्षानुसार निर्णयात्मक नहीं हुआ था। इस युद्ध में राणा प्रताप को अनिवार्य रूप से पीछे हटना पड़ा, तो अकबर को भी प्रताप का पूर्ण पराभव करना सम्भव नहीं हुआ। इसके बाद महाराणा प्रताप अपने प्राचीन दुर्ग में लौटे आये और वहीं से उन्होंने गोगुंडा दुर्ग में ठहरे मानसिंह के सैन्यदल पर अकस्मात धावा बोल दिया। महाराणा प्रताप को पराजित करने में असफल रहने के कारण अकबर मानसिंह तथा अन्य सरदारों पर बहुत नाराज हो गया था। अब वह खुद सेना लेकर गोगुंदा की ओर चल पड़ा। इस संकट काल में सिरोही का राव सुरजन व झालोर के महाराजा महाराणा की सहायता करने पहुँच गये। उसी समय अकबर के शत्रु चन्द्रसेन राठोड़ ने भी राणा प्रताप की ओर से अकबर के विरुद्ध युद्ध किया।

अकबर ने गोगुंडा पहुँचकर अपना डेरा जमाया। महाराणा अपने

Scanned by CamScanner

सैनिकों के साथ पहाड़ियों, घाटियों में छिपकर वहाँ से छापामार युद्ध करने लगे। महाराणा को पकड़ने के लिए अकबर ने अपनी सेना को चारों ओर रवाना किया। शत्रुओं से घिर जाने पर भी महाराणा विचलित नहीं हुए। उन्होंने गोगुंडा पर अचानक हमला कर गोगुंडा तथा उदयपुर के दुर्ग जीत लिये।

छः मास तक अकबर ने महाराणा प्रताप को परास्त करने का प्रयत्न किया परन्तु वह सफ़ल नहीं हो सका। अन्त में, युद्ध जारी रखने के लिए शाहबाजखान नामक सरदार को नियुक्त कर बादशाह अकबर खाली हाथ दिल्ली लौट गया।

शाहबाजखान और उसके बाद नियुक्त मिर्जा अब्दुल रहमान के द्वारा कुछ भी करना सम्भव नहीं हुआ। मिर्जा ने अपनी पत्नी व बच्चों को शेरपुर के किले में रखकर, प्रताप को बन्दी बनाने के इरादे से मेवाड़ में प्रवेश किया। उसी समय गोगुंडा में डेरा जमाये प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने शेरपुर पर आक्रमण कर मिर्जा की पत्नी एवं बच्चों को कैद कर लिया। यह समाचार प्रताप को ज्ञात होते ही उन्होंने तुरन्त अमरसिंह को आज्ञा दी कि उन स्त्रियों तथा बच्चों को सम्मानपूर्वक मिर्जा के पास अविलंब भेजा जाये।

अन्तिम प्रयास के रूप में अकबर ने 1584 में अपने सरदार जगन्नाथ को विशाल सेना देकर मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए भेजा। परन्तु दो वर्ष तक निरन्तर प्रयास करने के बावजूद भी महाराणा को बन्दी बनाने में जगन्नाथ विफल रहा।

संधि का प्रस्ताव

दुर्गम गुफ़ाओं में निवास करते समय राणा प्रताप के परिवार को बहुत

Scanned by CamScanner

कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जंगल में खाद्यान्न का भारी अभाव था। उनकी पत्नी व बच्चे भूख से तड़पने लगे। बिना निद्रा-आहार के उन्हें पहाड़ों और जंगलों में भटकना पड़ता था। एक बार महारानी ने जंगली घास के बीजों के आटे से कुछ रोटियाँ बनायी थीं। महारानी ने अपनी बेटी से कहा- 'अभी पूरी रोटी मत खाओ। आधी ही खाकर शेष कल के लिए छोड़ दो। तभी कहीं से एक जंगली बिलाव आया और उसने झपट्टा मारकर लड़की के हाथ की रोटी छीन ली। महाराणा ने जब यह करुण दृश्य देखा तो उनका वज्र-हृदय भी पिघल गया। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। उस एक क्षण में उनका मन कुछ विचलित हुआ। ऐसी विवश मानसिक अवस्था में महाप्रतापी महाराणा प्रताप ने अकबर को पत्र लिखकर सूचित किया कि 'मैं आपसे संधि करने को तैयार हूँ।'

अकबर बादशाह को महाराणा का उक्त पत्र मिला। वह पत्र देखकर उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह बार-बार पत्र पढ़ने लगा।

अकबर के हिन्दू सामन्तों में केवल राजकवि पृथ्वीराज ही ऐसा था जो सदा महाराणा प्रताप की प्रशंसा व गुणगान किया करता था। इसलिए अकबर ने पृथ्वीराज को महाराणा प्रताप का पत्र पढ़ने के लिए दिया। पत्र पढ़ते ही पृथ्वीराज के मुख से उद्‌गार निकले....'यह पत्र महाराणा प्रताप का कदापि नहीं हो सकता। उनकी उज्ज्वल (धवल) कीर्ति को कलंकित करने तथा आपको खुश करने के उद्देश्य से ही किसी धूर्त, कपटी व्यक्ति ने यह पत्र लिखा है। आप यदि अनुमति दें तो मैं राणा प्रताप को पत्र लिखकर इसकी सच्चाई का पता लगाऊँगा।' अकबर ने सहर्ष सम्मति दी।

Scanned by CamScanner

पृथ्वीराज ने राजस्थानी भाषा में काव्यरूप में एक पत्र लिखकर महाराणा को भेज दिया। जिसमें उसने लिखा था–

'राजस्थान के बाजार में 'प्रताप' के अतिरिक्त अन्य सभी को अकबर ने खरीद लिया है। केवल प्रताप को खरीदने का दुस्साहस उसमें नहीं है। अब सभी राजपूतों के लिए आपसे प्रार्थना करने का समय आ गया है कि राजस्थान के क्षात्र–तेज एवं धर्म को आप बचाइए। महाराणा प्रताप ने अपना सब कुछ खोकर भी स्वदेश, स्वधर्म, शौर्य एवं स्वाभिमान की रक्षा की है। आपके इस अतुलनीय साहस, पराक्रम को सारी दुनिया सराह रही है। अकबर चिरंजीवी नहीं। राजपूतों के वंश–वृक्ष तथा गौरव–गरिमा को पुनर्स्थापित करने का समय अवश्य आयेगा। तब सभी राजपूत प्रताप के ही पास आयेंगे। तब तक इस वंश की रक्षा करने का भार आपके ही सुदृढ़ कन्धों पर है।'

पृथ्वीराज कवि के इस पत्र ने राणा प्रताप को पूर्ण रूप से झकझोर दिया। उसका मन, जो अस्थिर था, पुनः स्थिर हो गया। अकबर की शरण में जाने का विचार त्याग कर राणा प्रताप पुनः अधिक तीव्रता एवं दृढ़ता से अपनी उद्देश्य पूर्ति में मग्न हो गये।

भामाशाह की स्वामीभक्ति

राणा प्रताप ने पुनः अपने सरदारों को एकत्रित किया और उनसे दृढ़तापूर्वक कहा – 'हम कभी भी अकबर का स्वामित्व स्वीकार नहीं करेंगे। जब तक तन में प्राण हैं, तब तक हम मेवाड़ के सम्मान हेतु सतत संघर्ष करते रहेंगे। अब हम सभी को सिंधुघाटी में चलकर पुनः सैन्यबल एकत्रित करना है।'

Scanned by CamScanner

महाराणा प्रताप अपनी पत्नी एवं बच्चों को लेकर अपने सरदारों के साथ सिंधु नदी घाटी की ओर चल पड़े। राजस्थान की सीमा को पार करते समय वृषभदेव के निकट उनकी एक वृद्ध से भेंट हो गई। वह वृद्ध था भामाशाह! उसी के कारण प्रताप के भाग्योदय के द्वार खुल गये। भामाशाह प्रताप के पूर्वजों के दरबार में मंत्री रह चुका था। मेवाड़ के महाराणा प्रताप अपनी मातृभूमि छोड़कर जा रहे हैं, ऐसी खबर सुनते ही वह उक्त स्थान पर आ पहुँचा था। अपने स्वामी को संकटग्रस्त देखकर उसका हृदय पीड़ा से कराह उठा। उसने महाराणा से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया–

'महाराज, मेरे पास असीम सम्पत्ति है। इससे आप पच्चीस हजार सैनिकों का बारह वर्ष तक आसानी से पालन कर सकेंगे। मै अपनी सारी धन–सम्पत्ति आपके पावन चरणों में समर्पित कर रहा हूँ। मेरा धन देश व धर्म के कार्य में लगेगा इससे अधिक परम सन्तोष देनेवाली बात मेरे लिए और क्या हो सकती है?

वृद्ध भामाशाह की यह बात सुनकर प्रताप का हृदय आनन्द व कृतज्ञता से भर आया। पहले तो वे उस धन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। परन्तु अन्त में भामाशाह के अत्यधिक आग्रह करने पर उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया।

महाराणा के अन्तिम दिन

भामाशाह की अपार सम्पत्ति के साथ अब अन्य स्थानों से भी धन आने लगा जिसका महाराणा प्रताप ने यथायोग्य उपयोग कर अपनी सैन्य शक्ति को फिर से एकत्रित किया।

मुगल सेनापति शाहबाजखान ने हलबीर नामक स्थान पर अपना डेरा

Scanned by CamScanner

लगाया था। अकस्मात एक रात्रि में घने अंधकार का लाभ उठा कर महाराणा प्रताप ने उसके डेरे पर आक्रमण कर उन्हें मार भगा दिया। इसी प्रकार के झंझावाती आक्रमण कर महाराणा ने देवियर, अमायत्ति तथा कमलमेर के किले अपने अधीन कर लिए। बाद में उदयपुर भी प्रताप के कब्जे में आ गया। इस प्रकार महाराणा एक के बाद एक किलों को जीतते गये।

महाराणा प्रताप ने पुनः जागृत होकर अपने दल-बल की सिद्धता कर मेवाड़ प्रान्त को अपने वश में कर लिया है, यह जानकर भी अकबर बादशाह शान्त रह गया। पुनः उसने संघर्ष का साहस नहीं किया।

इन विजयों से महाराणा प्रताप का समाधान नहीं हुआ। उनकी दृष्टि चितौड़ की ओर लगी थी। महाराणा प्रताप के अदम्य साहस, प्रचंड शौर्य और पराक्रम से प्रेरित होकर झालोर, जोधपुर, इडर, नाडोल तथा बूंदी के राजा भी अकबर के विरोध में खड़े हो गये। प्रताप के दूत दूर-दूर तक इस विद्रोह की अग्नि को फैलाने लगे।

हम दोनों बन्धु

एक दिन राणा के पास एक दूत आया। उसने महाराणा को प्रणाम कर उन्हें एक पत्र दिया और उसने बताया कि वह सिरोही से आया है। राणा ने पूछा- 'सिरोही पर दो सामन्तों का अधिकार है ना?' 'हाँ, महाप्रभु! वहाँ दो सामन्त हैं। एक हैं राव सुरजन और दूसरे आपके भाई जगमल', दूत ने कहा।

'वहाँ का क्या समाचार है?' महाराणा ने पूछा। 'सिरोही अकबर के विरुद्ध लड़ रहा है।' यह सुनते ही महाराणा की आँखे चमक उठीं।

Scanned by CamScanner

'हमारे जगमल ने भी इसमें भाग लिया होगा?' राणा ने जिज्ञासा व्यक्त की।

दूत ने सिर झुका लिया। वह नि:स्तब्ध खड़ा रहा।

'क्या बात है? तुम चुप क्यों हो गये?' 'महाराज अभय दें', दूत ने धीमे स्वर में याचना की। 'ठीक है, ठीक है, बोलो! तुम्हें अभय है।'

'आपके भाई ने इस लड़ाई में राव सुरजन की सहायता नहीं की। इसलिए उन दोनों में युद्ध भी हुआ जिसमें आपके भाई का स्वर्गवास हो गया।'

प्रताप एक क्षण मौन रहे। फिर कहा- 'देशद्रोही की मृत्यु से किसी को दु:खी होने का कोई कारण नहीं।'

'महाराणाजी, राव सुरजन ने यह समाचार आपको विदित कराकर आपसे क्षमा माँगी है।' 'उन्होंने गलती की ही नहीं है। अत: क्षमा माँगने का प्रश्न ही नहीं उठता।' राणा ने समाधानपूर्वक उत्तर दिया।

29 जनवरी 1597 का दिन!

महाराणा प्रताप का स्वास्थ्य दिन-पर-दिन गिरता गया। उस दिन राणा की अवस्था काफी बिगड़ गयी थी। पुत्र अमरसिंह को राणा ने अपने पास बुलाया और कहा-'अमरसिंह, अब मेरे महाप्रयाण का समय निकट आ रहा है।' 'ऐसा मत कहिये पिताजी, आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे', अमरसिंह ने बड़े बोझिल मन से दिलासा देने का प्रयास किया।

'बेटे, मैंने अपना सारा जीवन युद्धों में, संघर्षों में बिताया है। परमपिता भगवान एकलिंगजी की असीम कृपा से अब मेवाड़ का अधिकांश भाग

Scanned by CamScanner

स्वतंत्र हो गया है। परन्तु चितौड़, मंगलगढ़ के दुर्ग अभी भी मुगलों के अधीन हैं। तुम मुझे वचन दो कि मेरे उपरान्त इन दुर्गों को भी तुम स्वतंत्र करके ही रहोगे।' अमर सिंह ने सभी एकत्रित परिवार के लोग, प्रमुख सरदार तथा पंडितजन के समक्ष महाराणा को उनकी इच्छा पूर्ण करने का वचन दिया।

इस आश्वासन को सुनकर महाराणा के तेजस्वी मुख पर शान्तिभाव प्रकट हुआ। भारतमाता के इस शूरवीर पुत्र के प्राण पंच तत्त्व में विलीन हो गये।

भारतीय अतीत के पुराण-पुरुष प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप राष्ट्र, धर्म, संस्कृति, स्वाभिमान एवं स्वाधीनता की रक्षा करने वाले, युग-सुमेरु के समान सुकीर्तिमान हैं।

Scanned by CamScanner